बिलासपुर के विषय में

न्यायधानी बिलासपुर धान का कटोरा के नाम से प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ राज्य में अवस्थित है। बिलासपुर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 111 कि.मी. दूर अरपा नदी के तट पर समुद्र तल से 860 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह स्थान दुनिया भर में आम, साड़ी, सुगंधित दुबराज चावल, हैंडलुम,बुने हुए कोसा रेशम तथा समृद्धि एवं विविधता पूर्ण संस्कृति लिए जाना जाता है। ऐतिहासिक स्थल रतनपुर अपने किले और सिद्ध पीठ महामाया मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। इस किले का द्वार शिव, विष्णु और ब्रह्मा के तीन प्रमुख देवताओं को दर्शाता है। 10वीं और 11वीं शताब्दी का पातालेश्वर केदार मंदिर पुरातात्विक स्थल है और मल्हार का मुख्य आकर्षण है। एक और ऐतिहासिक स्थान तालाग्राम देवरानी–जेठानी मंदिर और रूद्रशिव की अद्वितीय प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि मुण्डकोपनिषद की रचना मदकू द्वीप में की गयी है, जो भारत के राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' का स्त्रोत है।

बिलासपुर कैसे पंहुचें

बिलासपुर हवाई मार्ग से

बिलासपुर से निकटतम हवाई अड्डा स्वामी विवेकानन्द हवाई अड्डा रायपुर है, जो बिलासपुर से 3 घण्टे की दूरी पर स्थित है यह लगभग सभी महत्वपूर्ण शहरों से जुड़ा हुआ है, जैसे भोपाल, अहमदाबाद, नागपुर, चंडीगढ़, चेन्नई, हैदराबाद, इन्दौर, जयपुर, दिल्ली, कोलकाता एवं मुम्बई।

बिलासपुर रेल/सड़क मार्ग से

बिलासपुर दक्षिण–पूर्व–मध्य रेल्वे का मुख्यालय है यह मुम्बई–कलकत्ता रेल्वे लाइन पर स्थित है,जो भारत के लगभग सभी महत्वपूर्ण शहरों से रेल्वे/सड़क मार्ग से जुडा हुआ है।

महत्वपूर्ण संपर्क:

डॉ. नीलकंण्ठ पाणीग्रही :	8249300592
डॉ. सीमा पांडे :	8839166780
श्री ललित शर्मा :	9754433714
डॉ.एम.एन. त्रिपाठी :	9981401993
श्री अमित बघेल :	9826339264

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

शोध सारांश (Abstract) जमा करने की अंतिम तिथि : **15 अक्टूबर, 2019**
शोध सारांश के स्वीकृति भेजने की तिथि : **18 अक्टूबर, 2019**
पंजीयन की अंतिम तिथि : **23 अक्टूबर 2019**

शोध सारांश अधिकतम 300 शब्दों का होना चाहिए। कृपया कृतिदेव 010 फॉन्ट/यूनिकोड का प्रयोग करें। लेखक की संबद्धता हेतु पूर्ण पत्राचार पता, ईमेंल एवं मोबाइल नंबर सहित प्रेषित करें। शोध सारांश का प्रारुप वेबसाइट पर उपलब्ध है। शोध सारांश केवल ईमेल के द्वारा निम्न पतों पर ही प्रेषित किया जाना है:
seminardakshinkosal@gmail.com
ggvseminar19@gmail.com

पंजीयन विवरण

	23 अक्टूबर 2019 तक	23 अक्टूबर 2019 के उपरान्त
शिक्षाविद	500 रूपये	600 रूपये
शोधार्थी	400 रूपये	500 रूपये
परास्नातक विद्यार्थी	300 रूपये	400 रूपये

पंजीयन शुल्क अंतिम तिथि के पूर्व संगोष्ठी के खाता कमांक: 00000037137162271, नाम:Registrar, Guru Ghasidas University Bilaspur, भारतीय स्टेट बैक,ifsc code-SBIN0018879 मे NEFT के माध्यम से जमा कराया जा सकता है। इसके उपरान्त स्थल–पंजीयन डेबिट/केडिट कार्ड के माध्यम से भी किया जा सकता है।

आवास व्यवस्था

आवास व्यवस्था का अनुरोध पंजीयन प्रपत्र मे अंकित कर भेजे। आवास व्यवस्था उपलब्धता के आधार पर प्रदान की जायेगी। अद्यतन सूचना के लिये वेबसाइट का अवलोकन करें।

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University)
Koni, Bilaspur (Chhattisgarh) 495009 INDIA
Ph: +91-7752-260283, +91-7752-260353
Website: www.ggu.ac.in

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(05 - 06 नवम्बर, 2019)

दक्षिण कोसल का इतिहास, संस्कृति, सभ्यता एवं समाज : शोध–विमर्श

(गौरवशाली दक्षिण कोसल)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़
एवं
सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट, रायपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित

संगोष्ठी की प्रस्तावना

दक्षिण कोसल प्रकृति की गोद में बैठा एक सुन्दर शिशु की भांति दिखाई देता है। यहाँ की पुण्य भूमि में चित्रोत्पला महानदी, शिवनाथ, हसदो जैसे जलप्रवाह छोटे शिशु की किल्लोरियाँ जैसी प्रतीत होती है। दक्षिण कोसल में प्राचीन कालीन संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। मल्हार को दक्षिण कोसल के प्रमुख राजवंशों की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। मल्हार में ई.पू.लगभग 1000 से ई. 1300 तक के अवशेश प्राप्त होते हैं। अगस्त्य ऋशि ने भी दक्षिणा पथ की यात्रा की थी। जनश्रुति के अनुसार सरगुजा के मैनपाट पर सरभंजा ग्राम में अगस्त्य मुनि का आश्रम था। श्री राम ने अपने वनवास के दौरान दक्षिण कोसल की यात्रा की। महाभारत काल में छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र 'कान्तार' शब्द से जाना जाता था। छत्तीसगढ़ की तीन प्रमुख आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक नगरी सिरपुर, आंरग और रतनपुर में महाभारत कालीन साक्ष्य पाए गए हैं। सरगुजा के रामगढ़ की पहाड़ी में प्राचीन नाट्यशला है, जहाँ कालीदास ने प्रसिद्ध 'मेघदूतम्' की रचना की। इन गुफाओं में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्र अंकित हैं तथा कई स्थानों पर प्राचीन बौद्ध मंदिर व बौद्ध प्रतिमायें मिली हैं। रामगढ़, सीताबेंगरा तथा जोगीमारा की गुफाओं में मौर्य कालीन अवशेषों के प्रमुख स्थल हैं। छत्तीसगढ़ सातवाहन, वाकाटक, गुप्तवंश, राजर्षितुल्य कुल, नल वंश, शरभपुरीय वंश, सोमवंश, कलचुरी वंश मराठों तथा अंग्रेजों की गतिविधियों से भी प्रभावित रहा है।

छत्तीसगढ़ के संत बाबा गुरू घासीदास जी की जन्मस्थली एवं उनकी पावन पुण्य स्थली गिरौदपुरी है। कबीर पंथ और सतनाम पंथ के अनुयायी भी यहाँ पर पाए जाते हैं। छत्तीसगढ़ का चम्पारण शुद्धाद्वैत के प्रर्वतक महाप्रभु बल्लभचार्य की जन्म स्थली है। इनके साथ ही छत्तीसगढ़ की धरती अनेक महान सपूतों की जन्मस्थली रही है। वर्तमान समय में भारतीय समाज वैश्वीकरण की ओर अग्रसर है। ऐसी स्थिति में क्षेत्रीय प्रवृत्तियों को समाहित कर विकास को सर्वसमावेशी और समस्पर्शी बनाने का सामुहिक प्रयास अपेक्षित है, जिससे कि सम्यक संतुलन और सतत विकास की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सके। रामायण काल से ही दक्षिण कोसल, भारत का अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, यहाँ की लोक परम्परायें, धर्म एवं संस्कृति पर्याप्त रूप से समृद्ध है। जनजातीय बहुल दक्षिण कोसल के इतिहास पर और अधिक मौलिक अनुसंधान की आवश्यकता है। यहाँ की नदी घाटी सभ्यता एवं राजनीतिक इतिहास के विकास के साथ-साथ समाज, संस्कार, विभिन्न धर्म परम्पराओं एवं उनके महत्व, वास्तुकला, चित्रकला, बोली-भाषा का महत्व है। इसके अलावा जनजातीय समुदाय का मौखिक इतिहास एवं कथा की वाचिक परम्परा महत्वपूर्ण है। यह विशिष्ट सम्मेलन भारत के एक प्रमुख क्षेत्र, दक्षिण कोसल के प्राचीन वैभव से लेकर आधुनिक काल में स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के रचनाकारों के साहित्यिक अवदान के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श कर नये भारत के उन्नयन में अवसर प्रदान करेगा। यह शोध संगोष्टी दक्षिण कोसल के प्राचीन मृण्मूर्तिकला, शिल्प कला एवं धर्म दर्शन में छिपी वैज्ञानिकता को अनावृत कर अन्वेषण के लिए भी प्रेरित करेगी।

दक्षिण कोसल का इतिहास, संस्कृति, सभ्यता एवं समाजः शोध विमर्श (विषय एवं उपविषय)

1. इतिहास एवं लोक परम्परा

(i) इतिहास का मौलिक एवं आधुनिक अनुसंधान तथा लेखन
(ii)दक्षिण कोसल का इतिहास
(iii)लोक में कथा कहानी की वाचिक परम्परा
(iv)स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के रचनाकारों का साहित्यिक अवदान

2. कला,सभ्यता एवं समाज

(i)छत्तीसगढ़ की कलचुरी कालीन वास्तुकला
(ii)दक्षिण कोसल की नदी घाटी सभ्यता
(iii)गृण्यगयीमूर्ति कला, शिल्प कला, वास्तु कला एवं उनकी आर्थिक संरचना
(iv)दक्षिण कोसल की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संरचना
(v)छत्तीसगढ़ के शैल चित्र की प्राचीनता एवं विषय वस्तु

3. धर्म, दर्शन, आध्यात्म एवं विज्ञान

(i) दक्षिण कोसल के प्राचीन आश्रम, ऋषि एवं गोत्र परम्परा
(ii) दक्षिण कोसल के ऋषि, मुनि परिव्राजक परम्परा एवं उसका महत्व
(iii) दक्षिण कोसल की संत परम्परा एवं जन मानस पर प्रभाव
(iv) छत्तीसगढ़ में बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव धर्म एवं शाक्त परम्परा
(v) छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ एवं सामाजिक सुधार
(vi) दक्षिण कोसल की परम्परागत वैज्ञानिक पद्धति एवं वर्तमान सन्दर्भ
(vii) सर्वे भवन्तु सुखिनः

4. जनजातीय संस्कृति एवं विकास

(i) जनजातीय साहित्य, संस्कृति एवं जीवन शैली
(ii) दक्षिण कोसल की जनजातियों एवं उनकी भाषा/बोलियाँ
(iii) बस्तर क्षेत्र की जनजातीय परम्परा में संस्कारों का महत्व
(iv) जनजातीय समुदाय में परम्परा एवं वाचिक इतिहास
(v) जनजातीय साहित्य और संस्कृतिः खान पान, सौंदर्य प्रसाधन एवं जीवन शैली

मुख्य संरक्षक
प्रो. अंजिला गुप्ता
कुलपति
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

संरक्षक
प्रो. वी. के. स्थापक प्रो. शैलेन्द्र सराफ

समन्वयक
प्रो. वी. एस. राठौर

अकादमिक संयोजक **संयोजक** **संयोजक**
डॉ. नीलकण्ठ पाणिग्रही डॉ. सीमा पाण्डेय श्री ललित शर्मा

आयोजन-सचिव **आयोजन-सहसचिव**
डॉ. एम. एन. त्रिपाठी श्री अमित बघेल

सदस्य
श्री विवेक सक्सेना डॉ. रत्नेश सिंह डॉ. राजभानु पटेल
डॉ. एस.एस. ठाकुर

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, (बिलासपुर) छत्तीसगढ़ राज्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के 25 नं. के तहत् स्थापित है। गुरू घासीदास विश्वविद्यालय सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित है, विश्वविद्यालय को उचित नाम, महान संत गुरू घासीदास (जन्म 17वीं सदी में) के सम्मान स्वरूप दिया गया, जिन्होनें समाज मे व्याप्त बुराईयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत् संघर्ष छेड़ा। विश्वविद्यालय एक आवासीय सम्बद्ध संस्था है। इसमें स्थानीय लोगों की शिक्षा की आवश्यकता के लगभग पूरे आयामों को शामिल किया गया है। इस विश्वविद्यालय ने सामुदायिक विकास के विस्तार के साथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जैसे उन्नत भारत अभियान, कौशल विकास कार्यक्रम, एवम् युवाओं को शामिल करने की समाज की आकांछा को पूरा करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है।

सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट

सेन्टर फॉर स्टडीज ऑन हॉलिस्टिक डेवलपमेंट एक पंजीकृत समिति है, इसका उद्देश्य शोध आधारित अध्ययन के माध्यम से विकास के विभिन्न आयामों पर ठोस एवं गंभीर विमर्श करना है। यह संस्था भौतिक विकास के साथ-साथ मानवीय एवं सामाजिक विकास की ओर अग्रसर है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संवाद के विभिन्न माध्यमों का उपयोग संस्था की स्वाभाविक प्रक्रिया है। चिंतनशील, शोधाग्रही महानुभावों से संवाद एवं उद्देश्यमूलक संबंध स्थापित करना, संस्था की सर्वोच्च प्राथमिकता है।